2

''तुम्हारे पिता की, ... जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें''

(मत्ती 5:13-16)

यह पाठ आपकी सबसे मूल्यवान और महत्वपूर्ण सम्पत्तियों में से एक पर है। यह कुछ ऐसा है जो सब के पास होता है। मेरे पास है, आपके पास नहीं है। हर किसी के पास चाहे और कुछ हो या न हो, यह होता है। आप चाहें इसे बेच भी दें तो भी यह आपके पास रहता है। आपके मरने के बाद भी यह रहता है। मैं आपके *प्रभाव* की बात कर रहा हूं।

कई आयतें सकारात्मक प्रभाव अर्थात अच्छा नमूना बनने की आवश्यकता के बारे में बताती हैं।[1] यीशु ने अच्छा नमूना दिया ताकि हम उसके कदमों में चल सके (1 पतरस 2:21; देखें यूहन्ना 13:5)। पौलुस ने हमेशा अच्छा नमूना बनने (देखें फिलिप्पियों 3:17) की कोशिश की और उसने तीमुथियुस और तीतुस को भी ऐसा ही करने के लिए प्रोत्साहित किया (1 तीमुथियुस 4:12; तीतुस 2:7)। विश्वासी पत्नियों को अपनी वफ़ादारी का नमूना देकर अपने अविश्वासी पतियों को जीत लेने का आग्रह किया गया है (1 पतरस 3:1, 2)। परन्तु प्रभाव की शक्ति और उद्देश्य पर इन दोनों से बढ़कर और कोई आयत नहीं बताती, जितना हमारे पाठ का यह वचन बताता है।

पिछले पाठ में हम ने संक्षेप में धन्य वचनों की समीक्षा की थी (5:3-12)। यीशु की उन बातों से हमें स्वर्गीय राज्य के लोग होने की मूल विशेषताएं मिलती हैं। जब मैं नवयुवक था तो मैं बॉय स्काउट अमेरिका का सदस्य था। हमें बॉय स्काउट का नियम सीखना आवश्यक था, जिसमें यह घोषणा है कि बॉय स्काउट के लिए भरोसेमंद, वफ़ादार, सहायक, मित्रतापूर्वक रहना, शिष्टाचारी, दयालु, आज्ञाकार, हंसमुख, सहासी, साफ़ सुथरा और विनीत होना आवश्यक है। धन्य वचनों को ''स्वर्गीय-लोक व्यवस्था'' कहा जा सकता है: स्वर्गीय राज्य का नागरिक मन का दीन, अपने पापों पर शोक करने वाला, परमेश्वर के अधीन, परमेश्वर के साथ सही रहने की इच्छा रखने वाला, दूसरों के प्रति दयालु, शुद्ध मन, परमेश्वर और दूसरों के साथ मेल रखने की कोशिश करने वाला और सताए जाने पर भी आनन्द करने वाला होता है।[2]

मसीह के राज्य के नागरिक की विशेषताओं पर ध्यान लगाने के बाद, हम ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं कि ''इन गुणों के होने का मकसद क्या है?'' और ''ऐसे व्यक्ति का लक्ष्य या मिशन क्या है?'' हमारा यह वचन पाठ उन प्रश्नों का उत्तर देता है कि ऐसे गुणों वाले लोग ''पृथ्वी का नमक'' और ''जगत की ज्योति'' हैं और वे जो कुछ भी करते हैं वह उनके पिता की जो स्वर्ग में है महिमा के लिए ही होगा।

इस पाठ में पहले हम मत्ती 5:13-16 की आयतों को देखेंगे। फिर हम उन कई सबकों पर

ध्यान देंगे जो हमें सीखने की आवश्यकता है।

वचन को देखना (5:13-16)

तुम पृथ्वी का नमक हो (आयत 13क)

यीशु ने यह कहते हुए आरम्भ किया, ''तुम पृथ्वी के नमक हो'' (आयत 13क)। 13 से 16 आयतों में उसने प्राचीन और आधुनिक दोनों संसारों में आम इस्तेमाल होने वाले दो तथ्यों यानी नमक और ज्योति का इस्तेमाल किया। ये दोनों तत्व जीवन के लिए आवश्यक हैं। रोमी सीनेटर प्लाइनी (62 ईस्वी- लगभग 115) ने लिखा, ''नमक और सूर्य की रोशनी से उपयोगी और कोई चीज़ नहीं है।''[3]

यीशु के समय में नमक के कई इस्तेमाल थे। इसका इस्तेमाल सेवाओं में वेतन के रूप में किया जाता था। यह कुछ दवाइयों में और बर्फ को गलाने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था। लेविये बलिदानों में यह होता था (लैव्यव्यवस्था 2:13)। ''विश्वकोषों में बताया जाता है कि नमक के लगभग 14,000 काम हैं।''[4] परन्तु कई लेखकों का मानना है कि यीशु के मन में नमक के दो मुख्य कारण स्वाद को बढ़ाना और चीज़ों को सम्भालना थे।

हम में से कई लोग अपने खाने को स्वादिष्ट बनाने के लिए नमक का इस्तेमाल करते हैं। बिना नमक या (नमक के विकल्प) के कुछ भोजन तो स्वादहीन ही होता है। अय्यूब में हम पढ़ते हैं, ''जो फीका है वह क्या बिना नमक खाया जाता है?'' (6:6)। पौलुस ने नमक के किसी कार्य को स्वादिष्ट बनाने की बात की, जब उसने अपने पाठकों को चुनौती दी, ''तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो'' (कुलुस्सियों 4:6क)।

जब मसीह ने कहा कि उसके चेले पृथ्वी का नमक हैं, तो वह अपने अनुयायियों के बारे में कुछ पूरक बात और पृथ्वी के बारे में कुछ आवश्यक बात कह रहा था। बिना यीशु के, पृथ्वी पर जीवन नीरस, स्वाद रहित और उक्ताने वाला है। कई गैर मसीही लोग एक काम से दूसरे काम की ओर जाने के समय अपने जीवनों के खालीपन से अवगत नहीं होते और न ही वे सोचने के लिए समय निकालते हैं। किसी दिन बीमारी या निकट मृत्यु के द्वारा ढीले पड़ जाने पर उन्हें अपने अस्तित्व के अर्थहीन होने का सामना करना पड़ेगा। केवल यीशु के साथ सही सम्बन्ध उनके जीवनों में असल और सदा रहने वाला उत्साह ला सकता है।

परन्तु जब मसीह ने कहा, ''तुम पृथ्वी के नमक हो,'' तो उसके मन में मुख्यतया नमक की चीज़ों को सम्भालने की खूबी थी। फ्रिज के आने से पहले लोग मीट को खराब होने से बचाने के लिए नमक का ही इस्तेमाल करते थे। गलील के मछुआरे अपनी मछलियों को नमक लगा देते थे। ओक्लाहोमा में जब मैं लड़का था, तब मीट ताज़ा नहीं खाया जाता था, तो इसे देर तक रखने के लिए नमक लगा दिया जाता था। वैसे ही मसीही लोग संसार में चीज़ों को ताज़ा रखने वाले हैं। दस धर्मी लोगों के होने से सदोम और अमोरा का विनाश होना रुक सकता है (देखें उत्पत्ति 18:32)। आज धर्मी पुरुषों और स्त्रियों के होने से पापपूर्ण संसार के पतन होने की गति कम हो सकती है और इसे पृथ्वी के अन्त में नष्ट हो जाने से पहले मन फिराने का समय मिल सकता है (2 पतरस 3:10)।

यीशु के शब्दों का अर्थ है कि संसार नष्ट हो रहा है। छोड़े गए मांस के लिए खराब हो जाना स्वाभाविक है और अपने भरोसे गए संसार का पतन होना स्वाभाविक है। संसार कितना भ्रष्ट हो सकता है? रोमियों 1:18-32 और 2 तीमुथियुस 3:1-5-या केवल अपने आस-पास। क्या आपको नैतिकता के गिरे हुए मापदण्ड, ईमानदारी में कमी, परिश्रम करने की लगन में कमी या दुष्टता बढ़ती दिखाई देती है?[5] किसी ने कहा है कि जब मैं संसार के स्वभाव पर ध्यान करता हूं, तो मुझे आश्चर्य नहीं होता कि यह बुरा है। इसके बजाय मुझे आश्चर्य होता है कि इसमें कोई अच्छा है। मैं सुझाव देना चाहता हूं कि संसार में ''कुछ अच्छाई'' यीशु के प्रभाव और उसके चेलों के नमूने के कारण है।

अपने वचन पाठ में लौटते हुए हम पढ़ते हैं, ''परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा?''[6] (मत्ती 5:13ख)। यीशु के प्रश्न को समझने के लिए हमें उसके समय के नमक के बारे में कुछ जानकारी होना आवश्यक है। यह वह शुद्ध सोडियम कलोराइड नहीं था जिसका आज हम में से अधिकतर लोग इस्तेमाल करते हैं। फलस्तीन का नमक ''मुख्यतया मृत सागर से लिए गए भाप बने पानी की मैल से इकट्ठे हुए ढेले होते थे।''[7] इस नमक में कई अशुद्धताओं के साथ रसायन भी होते थे। नमी में रखने पर सोडियम क्लोराइड यानी खाने वाला नमक घुल सकता था।[8] बच गए नमकीन ढेर में कोई स्वाद या चीज़ों को सम्भालकर रखने का गुण नहीं होता था। हम इसे ''नमक रहित नमक'' मान सकते हैं। यहां प्रभु सम्भवतया अपने राज्य के उन लोगों की बात कर रहा था जिनमें धन्य वचनों में बताए गए गुण नहीं रहते। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि लोगों और नमक में अन्तर है। ''नमक रहित'' मसीही मन फिराकर, परमेश्वर की ओर लौटकर अपने ''नमकीन होने'' को फिर से पा सकते हैं।

''नमक रहित नमक'' किस काम का? यीशु ने कहा, ''फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फैंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए'' (आयत 13ग)। जब कुछ चीज़ें अपना मुख्य उद्देश्य खो देती हैं तो भी वे किसी काम आ जाती हैं। फूल सूख जाने पर सुन्दता नहीं देता पर इसे पृथ्वी पर फैंका या मिश्रित खाद पर डाला और भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। ''नमक रहित नमक'' के साथ ऐसा नहीं है। यदि उपजाऊ भूमि पर फैंका जाए तो यह ज़मीन को ही बंजर बना देता है। एक और अवसर पर, यीशु ने कहा, ''वह न तो भूमि के और न खाद के लिए काम में आता है: उसे तो लोग बाहर फैंक देते हैं'' (लूका 14:35क, ख; SEB)। लोग इसे कहां फैंकते थे? ऐसे रास्तों पर जो देश को उलट-पुलट कर देते हैं वहां इससे कोई हानि नहीं होती थी और वहां यह ''लोगों के पैरों तले लताड़ा'' जाता था।

यीशु ने भलाई के लिए अपना प्रभाव खो चुके मसीही का वर्णन कैसे किया? यीशु ने कहा कि वह किसी काम का नहीं है। डी. ए. कार्सन ने लिखा है कि अनुवादित शब्द ''स्वाद बिगड़ जाए'' का यूनानी शब्द नये नियम में चार बार इस्तेमाल हुआ है। दो बार इसे नमक से जोड़ा गया है पर दो बार ''इसका अधिक सामान्य अर्थ 'मूर्ख बनाना या बनना' '' है। कार्सन ने कहा, ''यह निष्कर्ष न निकालना कि अपना स्वाद खो चुके चेले वास्तव में अपने आपको मूर्ख बना रहे हैं कठिन है।''[9] कितने दुख की बात है!

जगत की ज्योति (आयतें 14-16)

नमक का प्रभाव मुख्यतया मसीही के नकारात्मक प्रभाव पर ध्यान देता है। आयत 14 में मसीह सकारात्मक में लौट आया। उस आयत में हमें ''मसीही व्यक्ति के बारे में अब तक की सबसे चौंकाने वाली और असाधारण बातें'' मिलती हैं।[10] ''तुम जगत की ज्योति हो'' (आयत 14क)। बाइबल बताती है कि ''परमेश्वर ज्योति है: और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं'' (1 यूहन्ना 1:5)। अपने लिए यीशु ने कहा, ''जगत की ज्योति मैं हूं'' (यूहन्ना 8:12क; देखें 9:5; 12:35, 46; मत्ती 4:16)। अब उसी शब्दावली का इस्तेमाल करते हुए उसने अपने चेलों से कहा, ''*तुम* जगत की ज्योति हो।'' परमेश्वर के पुत्रों और यीशु के चेलों के रूप में, हमें ''जगत में जलते दीपकों की नाईं चमकना'' आवश्यक है (फिलिप्पियों 2:15; KJV)।[11]

बेशक हम समझते हैं कि जो भी रौशनी हमारे अन्दर है वह हमारी अपनी नहीं है। हमारी सामर्थ प्रभु की ओर से है। हमारी रौशनी केवल उसका प्रतिबिम्ब है। पौलुस ने इफिसुस के मसीही लोगों को लिखा, ''क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो'' (इफिसियों 5:8)। ''प्रभु में'' वाक्यांश को रेखांकित कर लें। हम ज्योति केवल ''प्रभु में'' ही बन सकते हैं। यह कहने के बाद कि ''जगत की ज्योति मैं हूं'' यीशु ने कहा, ''*जो मेरे पीछे हो लेगा,* वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा'' (यूहन्ना 8:12)।

ज्योति क्या करती है? इसका मुख्य उद्देश्य *अन्धेरे को छितराना* होता है। मत्ती 5:14 में संसार के बारे में यीशु का कथन क्या है? यह घोषणा करता है कि संसार अन्धकार में है। संसार को यह मानना अच्छा नहीं लगता; लोगों को यह कहना अच्छा लगता है कि ''हम एक जागृत समय में रहते हैं।'' परन्तु मनुष्य कहां से आया, मनुष्य यहां क्यों है और मनुष्य कहां जा रहा है पर संसार की उलझन पर ध्यान दें, जो ऐसे प्रश्न हैं कि बाइबल में उनका स्पष्ट उत्तर है। सांसारिक सोच अन्धकार के पर्दे से ढकी हुई है। उस अन्धकार का कुछ कारण ज्योति से अनजान होना, विशेषकर परमेश्वर के वचन की रौशनी से अनजान होना है, जबकि कुछ कारण जानबूझकर उस रौशनी को नकारना है।

मसीही लोगों के रूप में हमें जितना हो सके अन्धकार को छितराने की चुनौती दी गई है। उसे करने का एक ढंग परमेश्वर के वचन को सिखाना और उसका प्रचार करना है जो कि ज्योति ही है (भजन संहिता 119:105)। परन्तु हमारे वचन पाठ का ज़ोर इस बात पर है कि हमें ''वचन को *जीने से* जुड़ा हो।'' ''अच्छे चलन के बिना अच्छी बातें किसी काम की नहीं हैं।''[12]

क्या संसार के लोग हमें सराहेंगे, जब हम अन्धकार में अपनी ज्योति को चमकाते हैं? कुछ सराहेंगे, उन कुछ लोगों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद! पर अधिकतर लोग नहीं सराहेंगे। अन्धकार के बिखरने का एक परिणाम यह होता है कि सब कुछ सामने आ जाता है; तेज रौशनी में हम चीज़ों को वैसे ही देख सकते हैं जैसी वह हैं। पौलुस ने लिखा कि ''जितने कामों पर उलाहना दिया जाता है वे सब ज्योति से प्रगट होते हैं'' (इफिसियों 5:13क)। इसमें पाप की कुरूपता[13] का प्रगट होना भी शामिल है और संसार को यह पसन्द नहीं। यीशु ने कहा:

> ... ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना

क्योंकि उन के काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए (यूहन्ना 3:19, 20)।

''ज्योति की सन्तान'' (इफिसियों 5:8) और अन्धकार की सन्तान के बीच झगड़े का कारण साफ़ हैं क्योंकि परमेश्वर की वफ़ादार सन्तान का जीवन दुष्ट लोगों के जीवनों को एक खामोश डांट है। यह सताव का कारण भी हो सकता है (मत्ती 5:10-12)।

परन्तु ज्योति केवल कुरूपता को ही प्रगट नहीं करती। यह उस कुरूपता को सुधारने के लिए आवश्यक उजाला भी देती है। यह उस मार्ग को प्रगट करती है जिस पर लोगों को चलना चाहिए। इसलिए प्रभु ने अपने चेलों से ज़ोरदार आग्रह किया कि ''तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके'' (आयत 16क)!

यीशु ने अपने ज्योति चमकाने के महत्व पर ज़ोर देने के लिए दो-दो उदाहरणों का इस्तेमाल किया। पहला तो ''पहाड़ पर बसा नगर'' है। उसने कहा, ''जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता'' (आयत 14ख)। उस ज़माने में नगर कम से कम दो कारणों से ऊंचे क्षेत्रों में बसे होते थे। एक कारण तो खेतीबाड़ी था यानी खेतीबाड़ी के लिए ज़मीन बचाने के लिए। दूसरा कारण रक्षात्मक था, क्योंकि ऊंचे स्थान से बचाव करना आसान होता था। फलस्तीन में ऐसे कई नगर थे, सो यह हो सकता है कि उन में से एक नगर यीशु के स्रोताओं के सामने ही हो।[14] और उसने अपने उपदेश में यह बात करते हुए हाथ उसी ओर किया होगा। यीशु की मुख्य बात आसान है कि जैसे पहाड़ पर बसा नगर छिप नहीं सकता वैसे ही मसीही की रौशनी छुपाई न जाए। इसे चमकने दो, जिससे अन्धकार मिट जाए।

यीशु का दूसरा उदाहरण इन शब्दों के साथ आरम्भ होता है: ''लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं रखते हैं'' (आयत 15क)। उस ज़माने का ''दीया'' जैतून के तेल से भरा कटोरा होता था,[15] जो आमतौर पर हाथ में आ सकता था। उस कटोरे का एक सिरा आम तौर पर बत्ती को पकड़ने के लिए एक ओर बना होता था।

अनुवादित शब्द ''पैमाना'' का अर्थ उस ज़माने का नापने वाला बड़ा कटोरा है,[16] परन्तु संक्षेप में कहें तो ऐसा कटोरा अनावश्यक है। यह उदाहरण किसी ऐसी चीज़ की है जिससे दिए को ढांपा जा सके। अन्य अवसरों पर यीशु ने खाट के नीचे छिपाने (देखें मरकुस 4:21; लूका 8:16) या तलघर में रखने की मूर्खता की बात की है (लूका 11:33)।[17] आयत 13 की शब्दावली को लें तो छिपी हुई रौशनी किसी काम की नहीं। ''नमक रहित नमक'' बेकार है और वैसे ही ''रौशनी रहित रौशनी'' है।

यदि लोग रौशनी जलाकर इसे पैमाने (या कोठरी या तलघट) के नीचे रख दें, तो इसका क्या बनना था। यीशु ने कहा वे इसे ''दीवट पर रखते थे, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है'' (मत्ती 5:15ख)। ''दीवट'' उसे कहा गया है जिस पर ऊंचे स्थान पर दीया रखा जाता है, जिससे पूरे घर में रौशनी हो सके। यह स्टैंड धातू या लकड़ी का या केवल शैल्फ या दीवार पर बनी जगह होती थी। उस ज़माने में अधिकतर घरों में केवल एक ही कमरा होता था जिस कारण छोटा दीया भी घर के सब लोगों को ''प्रकाश'' देने के लिए काफ़ी था।

यीशु हमारे लिए *अपनी रौशनी* को चमकाने की आवश्यकता पर ज़ोर देने को तैयार था। उसने कहा, ''तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों'' को देख सकें (आयत 16क, ख, घ)। जब तक हम लोगों से बड़ाई लेने और *अपनी* तारीफ़ करवाने के लिए कुछ नहीं करते, तब तक प्रभु के लिए किए गए हमारे काम को दूसरों को जानने देने में कोई बुराई नहीं है। मत्ती का अगला अध्याय इन शब्दों से आरम्भ होता है: ''सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिए अपने धर्म के काम न करो'' (6:1)। ज्योति का उद्देश्य ध्यान अपनी ओर खींचना नहीं, बल्कि उस ओर ध्यान दिलाना है जिसे यह रौशन करती है। जब मैं किसी अन्धेरे कमरे में जाकर लाइट जगाता हूं तो मैं अपनी आंखें रौशनी देने वाली चीज़ पर नहीं लगाता। जिसके बजाय मैं उसे देखता हूं, जो कमरे में रौशनी से प्रगट होता है।

यीशु ने कहा कि हमारी ज्योति ऐसे ही चमकनी चाहिए: ''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें'' (5:16)। यीशु ने और भी कई सामर्थ के काम किया, पर उसने वे इस प्रकार किए कि उन्हें देखने वाले लोग परमेश्वर की महिमा करें (देखें मत्ती 9:8; 15:31)। प्रेरितों ने अपने कामों को छिपाने का कोई प्रयास नहीं किया, बल्कि उन्होंने उन्हें ''ऐसे ढंग से'' किया कि लोग मसीह को ग्रहण करें और पिता को जानें (देखें प्रेरितों 2:43; 5:12)। फ्रैंक एल. कोक्स ने लिखा है कि चेलों को दो चरणों से बचना चाहिए, एक तो ''दिखावा'' (मत्ती 6:1) और दूसरा कायरता।[18] ज्योति न तो खलबली फैलाती है और न यह छिपाने की कोशिश करती है।[19]

मसीही लोगों को जो कुछ हम करते हैं वह कभी भी अपने आपको बढ़ावा देने के लिए नहीं बल्कि अपने स्वर्गीय पिता की महिमा करने के लिए होना चाहिए। पौलुस ने कहा, ''जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो'' (1 कुरिन्थियों 10:31)। जब पतरस ने उन गुणों की बात की जो हमें दिए गए हैं, तो उसने ज़ोर दिया कि हम उनका इस्तेमाल ऐसे करें ''जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रगट हो: महिमा और साम्राज्य युगानुयुग उसी की है। आमीन'' (1 पतरस 4:11ग)।

वचन से सीखना

मत्ती 5:13-16 की समीक्षा करते हुए हमने चलते-चलते कुछ प्रासंगिकताएं बनाईं; परन्तु हमारे वचन पाठ से कई सबक लिए जा सकते हैं। मैं उन में से कुछ सबक बताना चाहता हूं। कई एक-दूसरे से मिलते-जुलते होंगे, महत्वपूर्ण सभी हैं।

समाज के साथ सम्बन्ध

एक सवाल जो मसीही लोगों को सदियों से परेशान करता है वह यह है ''समाज के साथ हमारा सम्बन्ध क्या होना चाहिए?'' हम अपने आस पास के संसार को दुष्ट से दुष्ट होता देखते हैं और चकित होते हैं कि हमें क्या करना चाहिए। कइयों ने इस प्रश्न का उत्तर दिया है: ''समाज को छोड़ दो। अपने आपको संसार से अलग कर दो और यदि कोई सम्बन्ध रखना भी है, तो बहुत कम रखो।'' यीशु का उत्तर यह नहीं था। एक अर्थ में उसने कहा, ''समाज में रहो, पर इसमें नमक और ज्योति बनकर रहो।''

समाज पर प्रभाव

कोई विरोध कर सकता है, ''समाज में रहो? पर संसार तो बुरे से बुरा होता जा रहा है और अंधकार में छिपता जा रहा है, इसे कोई वापस नहीं ला सकता!'' यदि मत्ती 5:13-16 में यीशु के शब्दों का कुछ अर्थ है, तो उनका अर्थ यह है कि मसीही लोग समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाल *सकते* हैं। नमक की तरह विश्वासी मसीही नैतिक और आत्मिक गिरावट को कम कर सकते हैं और ज्योति की तरह वे आत्मिक अन्धकार को छितरा सकते हैं। चाहे हम अल्पमत में ही हैं और चाहे हमें सताया ही क्यों न जाए (आयतें 10-12) पर हम आशाहीन या शक्तिहीन नहीं हैं।

विलक्षणता की आवश्यकता

संसार पर अपेक्षित प्रभाव डालने के लिए हमें संसार से अलग होना आवश्यक है। हमें विलक्षण यानी ''संसार से निष्कलंक'' रहना आवश्यक है (याकूब 1:27)। यदि नमक में मांस की तरह ही रासायनिक मिश्रण होता तो यह मांस को खराब होने से नहीं बचा सकता था। यदि ज्योति में यही अंधकार होता तो यह अन्धकार को छितरा नहीं सकती। बहुत करके मसीही लोगों और गैर मसीही लोगों के बीच की रेखा धुंधली होती है। एक छिपकली है जिसे गिरगिट कहते हैं और उसमें रंग बदलने की क्षमता होती है ताकि यह अपनी पृष्ठभूमि के साथ मिल जाए। हम में बहुत से ''गिरगिट मसीही'' हैं जो संसार के साथ मिल जाने की कोशिश कर रहे हैं। हम ''जगत में'' (यूहन्ना 17:11) तो हैं पर हम ''जगत के'' नहीं हैं (आयतें 14, 16)।

साहस की आवश्यकता

जैसे कहा गया है कि प्रभु की मंशा यह नहीं थी कि हम समाज से निकल जाएं। यीशु के समय में इसेनी गुट होता था जो अपने आपको ''ज्योति की सन्तान'' कहते थे।[20] परन्तु उन में से कुछ लोग समाज से निकलकर मृत सागर के पश्चिम की ओर खेतों में रहते थे।[21] उनके पास संसार पर अपने प्रकाश को चमकने का अवसर नहीं था। आप और मैं हो सकता है कि उस चरम तक न जाएं, पर यह हो सकता है कि हम नमक और ज्योति की गतिविधि को चर्च बिल्डिंग की सेवाओं से मिला दें। यीशु ने यह नहीं कहा कि तू ''कलीसिया का नमक हो'' बल्कि उसने कहा कि ''तुम पृथ्वी का नमक हो।'' एक कनस्तर में नमक डालना और दूसरे कनस्तर में मांस डालने से मांस पर कोई सम्भालकर रखने वाला प्रभाव नहीं पडेगा।[22] मांस को सम्भालकर रखने के लिए नमक को वहीं रखना आवश्यक है जहां मांस है।

समाज पर प्रभाव के लिए साहस के तत्व की आवश्यकता है। हमें जहां भी अपने आपको पाएं नमक बनने की आवश्यकता है।[23] चाहे वह बाजार में हो, किसी पड़ोसी या मित्र से बात करते, उन लोगों से व्यवहार करते जिनसे हम मिलते हैं। हमें अपनी ज्योति को हर समय और हर जगह चमकने देना आवश्यक है। बच्चों का एक गीत है, ''उस कोने को जहां तुम हो चमका दो।''[24] अपने घर को चमका दो। अपने पड़ोस को चमका दो। काम की अपनी जगह को चमका दो। अपने स्कूल को चमका दो। निडरता से ''हर उस कोने को जहां तुम हो चमका दो।''

व्यक्तिगत जिम्मेदारी

अगला पाठ अपने आप ही स्पष्ट, पर इसका नाम बताना अभी भी सही है: यीशु की मंशा

थी कि हर मसीही नमक और ज्योति बने। कइयों को लगता है कि उनका कोई प्रभाव नहीं है। वे यह ज़ोर देते हैं, ''मेरी बात या मेरे काम की ओर कोई ध्यान नहीं देता।'' जॉर्ज डब्ल्यू. बेली की पसन्दीदा बात है कि ''छोटे से छोटे बाल की भी अच्छाई होती है। छोटे से छोटा पत्थर पानी में फैंके जाने पर चक्कर बना देता है। वैसे ही हम सब का प्रभाव है।''

यीशु ने किससे कहा कि ''तुम पृथ्वी का नमक हो'' और ''तुम जगत की ज्योति हो''; उसने ये बातें यूनानी दार्शनिक या रोमी अगुओं से नहीं कही। उसने फलस्तीन के पढ़े-लिखे और सभ्य लोगों से नहीं कहीं। (यहूदिया के यहूदी गलीलियों को अनपढ़ और असभ्य मानते थे [देखें यूहन्ना 1:46]।) यीशु ने ये बातें आम लोगों के लिए यानी अनपढ़ मछुआरों, किसानों और छोटे नगर के लोगों के लिए कहीं। एक अर्थ में उसने घोषणा की कि हर मसीही-मैं दोहराता हूं, हर मसीही, पृथ्वी का नमक और जगत की ज्योति है। यूनानी धर्मशास्त्र में आयत 13 और आयत 14 में दोनों जगह ''तुम'' शब्द पर ज़ोर दिया गया है। यह तो ऐसा है जैसे उन सब से बात की हो जो उसके पीछे चलते हैं, ''तुम-*सब और केवल तुम*-पृथ्वी का नमक और जगत की ज्योति हो!''

''चेतावनी का लेबल''

कुछ सामान पर चेतावनी वाले लेबल लगे होते हैं कि इस सामान की कुछ साल्ट किसी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं। नमक और ज्योति के रूप में अपने चेलों के यीशु के विवरण के तुरन्त बाद सताव पर उसकी बातें (5:11, 12)।[25] एक अर्थ में 11 और 12 आयतें चेतावनी वाला लेबल हैं जो कहती हैं कि नमक और ज्योति बनना हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। जैसे कहां गया है कि ज्योति कमियों और त्रुटियों को दिखाती है और संसार उसे पसन्द नहीं करता क्योंकि अपने स्वभाव से ज्योति साफ़ है और इसे देखा जा सकता है, यानी संसार जानता है कि इसे चिड़ किससे है। अपने कमियों को सुधारने और अपनी त्रुटियों को निकालने के बजाय संसार को रौशनी को बुझा देने की कोशिश करना आसान लगता है। क्या इसका अर्थ यह है कि हमें अपनी रौशनी छिपानी चाहिए? नहीं! यीशु चाहता है कि हम खतरे से सावधान हों, परन्तु उसकी चुनौती वही है कि ''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके ताकि तुम्हारे भले कामों को देखकर, जो पिता की है बढ़ाई करे।''

सारांश

आपको और मुझे उससे बड़ी शाबाशी या उससे बड़े चुनौती नहीं मिल सकती जो यीशु के शब्दों में है: ''तुम पृथ्वी के नमक हो ...। तुम जगत की ज्योति हो'' (मत्ती 5:13, 14क)। क्या आप संसार पर पड़ने वाले उस प्रभाव की कल्पना कर सकते हैं यदि ये सब लोग यीशु के पीछे चलने का दावा करने वाले ये सब काम पूरे करें। एक प्राचीन कहावत में दावा किया गया था कि ''यदि कलीसिया सममुच में एक पूरे दिन की अपनी बुलाहट के साथ जीएं, तो संसार रातों-रात बदल जाएगा।''[26] परमेश्वर हम सब को ''पृथ्वी के नमक'' और ''जगत की ज्योति'' बनने में सहायता करे!

टिप्पणियां

[1]प्रभाव और नमूने से सम्बन्धित और वचनों में नीतिवचन 22:1; मत्ती 13:33; 1 कुरिन्थियों 10:11; और याकूब 5:10 हैं। [2]मैं अपने भाई कोय रोपर का ऋणी हूं। (एट ट्रेन्ट चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, ट्रेन्ट, टैक्सस, 1 जनवरी, 2006. को दिया गया कोय रोपर का संदेश, ''हाऊ टू फाइंड हैप्पीनेस।'') [3]*नेचुरल हिस्ट्री* 31.102. डी. ए. कर्सन, ''मैथ्यू,'' *दि एक्सपोज़िटर'स बाइबल कमैंट्री,* अंक 8 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रीजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1984), 138 में उद्धृत। [4]हेरेल्ड हेजलिप, *डिसाइपलशिप,* दि ट्वंटियथ सेंचुरी सरमन्स सीरीज़ (अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रीचर्स प्रैस, 1977), 56. [5]इस वाक्य को जहां आप रहते हैं उस समाज की नैतिक समस्याओं से मेल खाने के लिए बदल लें। [6]यह एक बेतुका सवाल है जिसका उत्तर देना आवश्यक नहीं। नमक रहित नमक को फिर से नमकीन नहीं बनाया जा सकता। [7]हेरेल्ड फाउलर, मैथ्यू 1, बाइबल स्टडी टैक्सटबुक सीरीज़ (जॉपलिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस, 1968), 233. [8]कई बार नमक की बड़ी मात्रा इमारतों के कच्चे फर्श पर रखी जाती थी, जहां से नमी से नमक की गुणवत्ता प्रभावित होती थी। [9]करसन, 139. [10]डी. मार्टिन लॉयड-जोन्स, *स्टडीज़ इन द सरमन ऑन द माउंट,* अंक 1 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 159.

[11]मसीही लोगों के ज्योति होने के सम्बन्ध में, देखें यूहन्ना 12:36; इफिसियों 5:6-14; फिलिप्पियों 2:14-16; 1 थिस्सलुनीकियों 5:4-8. [12]रूडॉल्फ स्टायर, *दि वर्ड्स ऑफ़ दि लार्ड जीज़स,* अंक. 1, अनु. विलियिम बी. पोप (फिलाडेल्फिया: स्मिथ, इंग्लिश, एंड कं., 1859), 124. [13]1 कुरिन्थियों 4:5 में पौलुस ने ''अन्धकार की छिपी बातों'' की बात की जिन्हें प्रभु के वापस आने पर प्रगट किया जाएगा। [14]पहाड़ी उपदेश के परम्परागत स्थान के निकट ऐसे नगर के खण्डहर मिलते हैं। [15]KJV में ''मोमबत्ती'' है परन्तु ''मोमबत्तियां मसीह के समय के बाद तक नहीं होती थीं'' (जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, *दि न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री,* अंक 1-*मैथ्यू एण्ड मार्क* [पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गास्पल लाइट पब्लिशिंग कं., 2006], 52)। NKJV में ''लैम्प'' है। [16]NASB वाली मेरी प्रति में यह टिप्पणी है: ''पेक नापने वाला।'' पेक सूखे सामान को नापने की एक इकाई है जो आठ सेर [7.57 लीटर जितनी होती है] (*दि अमेरिकन हेरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्क. [2001], एस. वी. ''peck'')। [17]लूका 11:33 में अक्षरश: यूनानी शब्द ''गुप्त स्थान'' है। [18]कायर (डरपोक, भयभीत) होने सम्बन्धी देखें प्रकाशितवाक्य 21:8. [19]फ्रैंक एल. कोक्स, *समरन नोट्स ऑन दि सरमन ऑन द माउंट* (नेशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1955), 11. [20]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ दि सरमन ऑन द माउंट,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1978), 65.

[21]यह कुमरान समुदाय था, जहां प्रसिद्ध मृत सागर की पत्रियां पाई गईं थीं। [22]क्लोविस जी. चैप्पल, *दि सरमन ऑन द माउंट* (नैशविल्ले: अबिंग्डन-कोक्सबरी प्रैस, 1930), 127. [23]जहां आप रहते हैं उस समाज के अनुकूल बनाने लिए इस पद्य को बदल लें। [24]बच्चों का एक और उपयुक्त गीत है ''एक छोटा दिया।'' [25]ध्यान दें कि 11 और 12 आयतों में इस्तेमाल हुआ मध्यम पुरुष (''तुम'') 13 से 16 आयतों में भी है। दोनों भाग सीधे तौर पर यीशु के चेलों के लिए हैं। [26]हेज़लिप, 53.